भाषा व भाषा विकास के सिद्धांत

CTET Exam Notes : Child Development and Pedagogy (CDP)

in Hindi Medium

CTET 2015 EXAM NOTES

भाषा व भाषा विकास के सिद्धांत

भूमिका

भाषा, मनुष्य के भाव, विचार व अनभुव को अभिव्यक्त करने का सर्वाधिक महत्वपूर्ण तथा वयापक साधन है।भाषा मूलतः ध्वनि-संकेतों की एक व्यवस्था है, यह मानव मुख से निकली अभिव्यक्ति है, यह विचारों के आदान-प्रदान का एक सामाजिक साधन है और इसके शब्दों के अर्थ प्रायः रूढ़ होते हैं। भाषा अभिव्यक्ति का एक ऐसा समर्थ साधन है जिसके द्वारा मनुष्य अपने विचारों को दूसरों पर प्रकट कर सकता है और दूसरों के विचार जान सकता है। अतः हम कह सकते हैं कि 'भावों और विचारों की अभिव्यक्ति के लिए रूढ़ अर्थों में प्रयुक्त ध्वनि संकेतों की व्यवस्था ही भाषा है।'

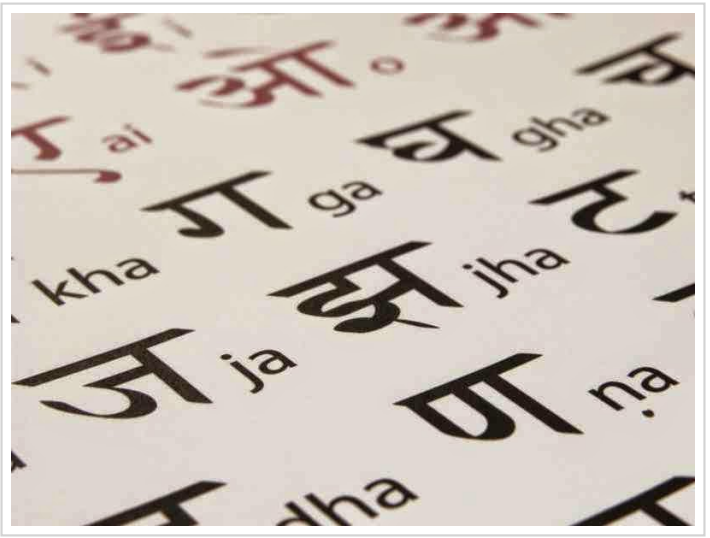

भाषा क्या है ?

यह पूर्व में ही स्पष्ट किया जा चुका है कि मनुष्य की सामाजिकता निर्वाह हेतु भाव-प्रकाशन का सर्वश्रेष्ठ साधन भाषा हैं, जिसमें श्रव्य संकेतों की इतनी अधिक प्रधानता रहती हैं कि भाषा से अभिप्राय प्राय: श्रव्य संकेतों से समझ लेते हैं लेकिन यह असत्य है। मनुष्य अपने भाव प्रकाशन हेतु वस्तुत: तीन साधनों को प्रयुक्त करता है।

(1) स्पर्श संकेत
(2) दृष्टि संकेत
(3) श्रव्य संकेत

ध्वनि आधारित भाषा के उच्चरित तथा लिखित रूप अनादि माने गए हैं। अध्ययन की दृष्टि से सार्थक ध्वनियों से निर्मित शब्द भाषा के अन्तर्गत सम्मिलित किए जाते हैं। इन ध्वनियों का विश्लेषण एवं अध्ययन हो सकता है। निरर्थक ध्वनियाँ भाषा के अन्तर्गत नहीं आती हैं, यहाँ तक कि शोक, विस्मय, एवं हर्ष व्यंजक सांवेगिक ध्वनियों पर भी भाषा की दृष्टि से विचार नहीं किया जा सकता है। मनुष्य सार्थक ध्वनि संकेतों का ही प्रयोग करता है। भाषा को परिभाषित करते हुए एनसाइक्लोपीडिया ब्रिटेनिका में स्पष्टत: उल्लेख है कि "भाषा यादृच्छिक मौखिक प्रतीकों की व्यवस्था है, जिसके द्वारा मनुष्य समाज एवं संस्कृति के सदस्य होने के नाते परस्पर विचारों एवं कार्यों का आदान-प्रदान करते हैं। "

TET Success Key

डॉ. भोलानाथ तिवारी द्वारा प्रस्तुत भाषा की एक अन्य परिभाषा इससे कहीं अधिक व्यापक है। उनके अनुसार-

"भाषा निश्चित प्रयत्न के फलस्वरूप मनुष्य के मुख से निःसृत वह सार्थक ध्वनि-समष्टि है, जिसका विश्लेषण और अध्ययन हो सके।"

भाषा विकास के सिद्धांत

1. दिव्योत्वत्ति सिद्धांत

दिव्योत्पत्ति सिद्धान्त- ईश्वरवादी प्रत्येक कार्य कलाप का संबंध किसी दिव्य शक्ति से जोड़ता है। ईश्वर ने मनुष्य को उत्पन्न किया है तो वह उसकी भाषा भी उत्पन्न कर सकता हैं। सभी धर्मावलम्बी अपने धर्मग्रन्थों में मानव को ईश्वर की श्रेष्ठ कृति मानते है और उसी से भाषा के अविर्भाव की कल्पना भी करते हैं। संस्कृत वाड्मय में संस्कृत भाषा को "देववाणी" कहकर समस्त भाषाओं की जननी घोषित की गई है। वाग्देवी (वाणी) को देवों ने उत्पन्न किया। जिसे सभी प्राणी बोलते हैं। 'दिव्योत्पत्ति सिद्धान्त' में केवल इतना सार तत्त्व है कि मनुष्य को ही सार्थक भाषा प्रयोग के लिए योग्य ध्वनियन्त्र मिला और उसे संचालित करने वाली बुद्धि भी। यह मत वैज्ञानिक दृष्टि से अग्राह्य है।

2 . संकेत सिद्धांत

संकेत सिद्धान्त- मनुष्य ने पारस्परिक विचार-विनिमय द्वारा ध्वन्यात्मक भाषा का जन्म दिया। आंगिक संकेत एवं अन्य संकेतों की असुविधा और अपूर्णता मिटाने के लिए उसने राय- बातचीत, भाषा जैसा समर्थपूर्ण और सुविधाजनक संकेत प्रस्तुत किए। सृष्टि के आरम्भ में ही यह संकेत निश्चित कर लिया गया कि इतने वर्णक्रम इस क्रम से उच्चरित होने पर अमुक अर्थ बोध कराएंगे। जैसे 'क' के बाद 'म' और 'म' के बाद 'ल' रहे- कमल से पुष्प विशेष का बोध होगा। इसी तरह अनंत संकेत बना लिए गए। जिनसे आज तक काम चल रहा है।

३. रतन सिद्धांत

रणन (डिड-डॉड.) सिद्धान्त- इस सिद्धान्त की ओर सर्वप्रथम संकेत यूनानी दार्शनिक प्लेटो ने किया था। किन्तु इसको पल्लवित जर्मन विद्वान मैक्समूलर ने किया। रणन सिद्धान्त के अनुसार शब्द और अर्थ में एक प्रकार का रहस्यात्मक नैसर्गिक संबंध होता है। प्रत्येक वस्तु की अपनी विशिष्ट ध्वनि होती हैं। जो आघात पड़ने पर सुनायी देती है। इसी ध्वनि को 'रणन' कहते हैं। जैसे विस्तृत जल प्रवाह को देखकर उसके मुँह से एकाएक 'नदी' शब्द निकल पड़ा। इसी प्रकार समग्र वस्तुओं के लिए शब्द बन गए हैं। फिर इनके वाचक शब्द भी बनते रहे।

4 . आवेग सिद्धांत

आवेग (पुह-पुह) सिद्धान्त- इस सिद्धान्त को मनोरागव्यंजक शब्द मूलकतावाद या मनोभाषि व्यंजकतावाद जैसे लम्बे शब्दों से हिन्दी की अनेक भाषा विज्ञान की पुस्तकों में प्रस्तुत किया गया है। इस सिद्धान्त के अनुसार हर्ष, शोक, विस्मय, क्षोभ, क्रोध, घृणा आदि मनोभावों की सहज अभिव्यक्ति से जो ध्वनियाँ उत्पन्न होती हैं उन्हीं से भाषा की उत्पत्ति हुई है।

5 . श्रम ध्वनि सिद्धांत

श्रम ध्वनि (यो-हे-हो) सिद्धान्त- शारीरिक श्रम करते समय स्वभावत: श्वास-प्रश्वास की गति तीव्र हो जाती है, जिसके परिणामस्वरूप मांस-पेशियों का ही नहीं स्वर तंत्रियों का भी आकुंचन-प्रसारण (सिकुडन-फैलाव) होने लगता है और उनका कम्पन्न बढ़ जाता है । अत: कुछ ध्वनियाँ निकलती हैं (जैसे हाय सा, हूँ सा, हूँ श्रम कार्य से उत्पन्न होने वाली ध्वनियों से ही कतिपय भाषा वैज्ञानिक भाषा की उत्पत्ति मानने के आग्रही हैं।

6 . अनुकरण सिद्धांत

अनुकरण (बोउ-बोउ) सिद्धान्त- बोउ-बोउ - भौं-भौं का अंग्रेजी रूपांतर है। इस सिद्धान्त का यह नाम जर्मन विद्वान मैक्समूलर ने विनोद में रख दिया। इस सिद्धान्त के अनुसार वस्तुओं का नामकरण उनसे उत्पन्न होने वाली प्राकृतिक ध्वनियों के आधार पर हुआ है, अर्थात् जिस वस्तु से जैसी ध्वनि उत्पन्न होती सुनी गई उसका उसी के अनुकरण पर नाम रख दिया गया हैं जैसे- झर-झर करने वाले जलप्रवाहों को निर्झर/झरना कहा जाने लगा।

7 . इंगित सिद्धांत

इंगित (जेस्चर) सिद्धान्त- इंगित सिद्धान्त के अनुसार मनुष्य ने अपने अंगों या आंगिक चेष्टाओं का ही वाणी द्वारा जैसा अनुकरण किया और उसी से भाषा की उत्पत्ति हुई। जैसे पानी पीते समय होठों के बार-बार सटने या श्वास खींचने से पा-पा जैसी ध्वनि हुई तो 'पा' का अर्थ पानी मान लिया गया। इसी तरह अनेक शब्दों का आरम्भ हुआ।

8 . समन्वय सिद्धांत

समन्वय सिद्धान्त- भाषा वैज्ञानिकों ने उपर्युक्त सभी सिद्धान्तों की अव्याप्ति और परिसीमा देखकर सबके समन्वय को भाषा की उत्पत्ति का आधार माना है। तात्पर्य यह है कि किसी एक सिद्धान्त को भाषा का आरम्भ मानने के बदले सभी सिद्धान्तों को मानना अधिक उचित है जैसे कुछ शब्द अनुकरण से उत्पन्न हुए तो कुछ आवेश की तीव्रता से और कुछ श्रम के साहचर्य से। इस प्रकार एक-एक सिद्धान्त को अलग-अलग मानने की अपेक्षा उनके समन्वय को भाषा की उत्पत्ति का कारण मानना निश्चित ही अधिक सार्थक सिद्ध होता है।

अवश्ये पढ़े: **भाषा और चिंतन: Language & Thought**

नोट: आपको हमारी पोस्ट कैसी लगी, कृपया कमेंट करके ज़रूर बताए ।

Saba Pasha
Saba Pasha is the founder and CEO of TET Success Key. She created one of the best site for exam preparation.Here you can find latest exam updates and free study

material for your exam preparation.